

निर्मल ज्योति

निर्मला कॉन्वेंट गर्ल्स इण्टर कॉलेज, झाँसी



प्रिय अभिभावक गण, अध्यापक, अध्यापिकाओं, पाठकों एवं प्यारे बच्चों,

एक नये विद्यालय में जब मेरा स्थानान्तरण हुआ तो वहाँ के बच्चों से जल्दी परिचित होने के लिए मैंने उनके टिफिन ब्रेक के समय मैदान में घूमना शुरू कर दिया। सभी बच्चे अपने दोस्तों के साथ अपना टिफिन बॉटकर खाते व जल्दी-जल्दी ढेर सारी मासूम बातें करते नजर आ रहे थे। तभी एक छोटी सी लड़की मेरे पास आकर रुकी और उसने मुझसे पूछा, “सिस्टर आप कहाँ से आई हैं?” मैंने उत्तर दिया, “बहुत दूर से।” बिना किसी झिझक के उसने फिर कहा, “इसलिए आप अकेली हैं।” यह कहकर वह अपने दोस्तों के पास दौड़ गई। लेकिन उसके उत्तर ने मुझे, सचमुच विचारों के गंभीर कशमाकश में अकेला छोड़ दिया। हकीकत में हम सब यात्री हैं जो जाने अनजाने अपनी मंजिल की ओर बढ़ रहे हैं। हमारी जिन्दगी की इस बढ़ती तीर्थयात्रा में हम प्रायः अकेले या फिर अपने परिवार और दोस्तों के साथ यात्रा करते रहते हैं।

इस तीर्थयात्रा में मंजिल से ज्यादा हमारी यात्रा की प्रक्रिया व उचित राह महत्व रखती है। परन्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह होता है कि हम अपने हृदय में क्या संजोय है, जिसे हम लेकर चल रहे हैं। क्योंकि वही हमें दूसरों से जोड़ता या अलग करता है, मायूस या फिर आशा प्रदान करता है। हमें इस यात्रा में कब चलना, दौड़ना, रुकना और आगे बढ़ना, कब कढ़ी मेहनत करना और कब कुछ न करते हुए मनन चिन्तन करना तथा समय परिवर्तन की बारीक लकीर पहचान कर अपनी अपनी राह बदलना, सब कुछ तो विद्यार्थी जीवन में सिखाया जाता है। विद्यालय छात्राओं के लिए दूसरा सुरक्षित घर है जो जीवन जीने की कला सिखाता है।

इन्हीं विचारों से ओत-प्रोत मुझे एक और घटना याद आ रही है। विद्यालय के कार्यालय के बाहर एक परेशान बालिका को जब मैं अन्दर लाई, उसने सिसकते हुए मुझे उसके घर में घटित एक अनहोनी को सुनाया। उसके साथ ही मैं शीघ्र प्रार्थना स्थल पहुँची और प्रार्थना के समय प्रेरित होकर, उस छात्रा की परेशानी को गंभीरता से लेते हुए बिना किसी विलम्ब के उसके घर अपने मोबाइल से फोन लगा दिया। फोन उसकी माँ ने उठाया। मैंने उस घटना के बारे में उसकी माँ से पूछा तो उसकी माँ ने बेटी से बात करने की इच्छा व्यक्त की और जैसे ही मैंने उसे फोन दिया। उन्होंने तीन बार पूछा, “मैं तुम्हारी हूँ कौन? लड़की ने तीन बार माँ से सिसकते हुए कहा, “आप मेरी मम्मी हैं।” परन्तु मैंने सिस्टर को सारी बातें बता दी, क्योंकि मैं सिस्टर से झूठ नहीं बोल सकती।

प्रिय अभिभावक मेरा विश्वास कीजिए माता पिता के बाद बच्चे विद्यालय में गुरुजनों पर विश्वास करते और सही मार्गदर्शन लेते हैं। हमारा विद्यालय बालिकाओं व अभिभावकों, को ‘कल आज और कल’ ‘बदलता कॉरवों’ ‘उड़ान स्वतंत्रता की’ और ‘चिन्तन’ जैसे कार्यक्रमों द्वारा जीवन की सच्चाई दिखाता जा रहा है। क्या आप इस आधुनिक युग में प्रवेश करने व इस जंग में भाग लेने के काबिल बन चुके हैं? इस बदलते समय में निर्मला कॉन्वेंट ने भी समय की पुकार व अभिभावकों की मांग पर ही लगभग अस्सी वर्षों से चले आ रहे हिन्दी माध्यम विद्यालय में अंग्रेजी माध्यम की कक्षाएं भी आरम्भ कर दी है। जिसमें हमें आप सभी का सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। आपकी इस तीर्थ यात्रा में ईश्वर आपके साथ रहें।

सिस्टर पूनम सी.जे.

प्रधानाचार्या

Ven. Mary Ward





“आपका आगमन हमारी समृद्धि”

‘परिवर्तन प्रकृति का नियम है, और जीवन को सफलता की ओर ले जाता है। ऐसा ही परिवर्तन हमारे झाँसी धर्मप्रान्त के नवनिर्वाचित बिशप श्रद्धेय ‘विल्फ्रेड मौरिस’ के आगमन से हुआ। दिनांक ३० सितम्बर २०२४ को निर्मला कॉन्वेंट के प्रांगण में बिशप जी के कदम रखते ही पुष्पों की वर्षा के साथ उनका स्वागत किया गया। उनके स्वागत में एक छोटा सा कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसमें प्रार्थना ‘राह दिखा दे-राह दिखा दे। नृत्य के साथ बिशप जी के लिए सभी छात्राओं ने प्रार्थना की। बिशप जी ने भी छात्राओं को सफलता की ओर जाने की राह दिखाते हुए कहा, -

काकचेष्टा बकोध्यानं श्वाननिंद्रा तथैव च ।

अल्पहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पत्रच लक्षणयः॥

बिशप जी ने निर्मला कॉन्वेंट के बच्चों में अनुशासन की भी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए विद्यालय को उच्च शिक्षर पर पहुँचने की कामना की।

ट्रीजा हाईफिल्ड, (सहा० अध्यापिका)

Hearty Congratulations
Sr Doreen
on your Golden Jubilee



Incredible Moment

“Show yourself glad and joyful, for Almighty God loves a cheerful giver.”

The Friends of Mary Ward group is very much active and vibrant in our school. We had the opportunity to meet Mother General Veronica Fuhrmann and her assistant Estella Grignola of the CJ congregation in our school on 12th December 2024. They travelled from Rome to visit us. We, the Friends of Mary Ward, were fortunate to interact with them. It was indeed a moment of grace for us.

"Be compassionate and merciful towards the poor, and be generous if you have the means. Do not call them beggars."

We, the Friends of Mary Ward, visited the jail on 16th August 2024 and 19th December 2024 to provide the inmates with essential items. During our visit, we noticed that the inmates were initially hesitant to interact with us. However, as we began distributing the items, they slowly opened up. They expressed their gratitude and shared their stories, struggles, and hopes. We observed a sense of relief and comfort on their faces as they interacted with us. We, too, were overjoyed to see their smiles.

Every month, on the 23rd, we, the Friends of Mary Ward, organize a meeting to discuss societal issues and plan upcoming events.



Akansha Kinter

Assistant Teacher (English Medium)



From the Pen of Editor...

Dear Readers,

Many of you dream of achieving success and reaching the top, but you may feel discouraged when you see others succeeding while you perceive yourself as a failure. You might already be familiar with the phrase, "There is always a place at the top," and that place could be yours. This reminds us that excellence and success are not reserved for a select few. If someone can become a topper by scoring 90% marks, you too can achieve it—and even surpass it—by scoring 90% or more. There are three main ways to achieve success:

1. By benefiting from others' mistakes. 2. By luck or chance. 3. By working very hard to achieve your goals.

You have probably heard the story of the 'Tortoise and the Hare,' where the tortoise wins the race by taking advantage of the hare's mistake. However, I would never suggest relying on the mistakes of others or waiting for luck to favour you. Nor should you allow yourself to commit mistakes that give others the upper hand. It's easy to blame destiny, but success lies in your own hands.

The only advice I can give you is to work hard and stay focused on your goals. Hard work not only attracts luck but also positions you to benefit from opportunities that may arise, even from the errors of others.

Remember, the top is never overcrowded because only a few dare to dream big and work tirelessly to achieve their goals. The top is not out of your reach. If you remain focused on your ambitions and pursue them with courage and determination, you will secure your rightful place at the top.

Stay determined and keep striving!



Nilam Gupta
(Editor)

प्रिय पाठक

छात्राओं के लिए बड़ा ही हर्षमय और गौरवपूर्ण पल होता है जब वह अपनी छोटी-बड़ी भावनाओं एवं विचारों को विद्यालय की पत्रिका में स्व-रचित लेख एवं रचनाओं में देखती हैं। यही कारण है कि गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी निर्मल ज्योति पत्रिका का नवीन संस्करण प्रकाशित हुआ है। विद्यालय की छात्राओं में कोई न कोई गुण अवश्य होता है। और उस गुण को विकसित व पूर्ण बनाने का कार्य विद्यालय की पत्रिका ही प्रदान करती है। वर्ष भर विद्यालय में चलने वाले कार्यक्रमों को सुचारु रूप से चलाने की सूचना भी इस पत्रिका के माध्यम से सुलभ हो जाते हैं। आप सभी पाठकों को यह बताते समय बड़ा ही हर्ष का अनुभव हो रहा है कि वर्ष २०२४-२०२५ का यह नवीन संस्करण हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में हमारी छात्राओं की अच्छी पकड़ को दर्शाता है। अपनी सोच व रचनाओं वाली नई कवयित्रियाँ और नई लेखिकाएँ को हार्दिक बधाइयों।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।



सुनीता मैथ्यूस, (सम्पादिका)



बदलता कारवां

सालों की मेहनत का फल है यह समय, आराम और सुकून का है नया प्रक्रमा जीवन के इस मोड़ पर भी आगे बढ़ते रहे, हर पल को हँसते-हँसते गुजारते रहें।

हमारे विद्यालय की छः अध्यापिकाएँ श्रीमती संध्या वाल्टर, श्रीमती अरुणा श्रीवास्तव, श्रीमती रेखा भार्गव, श्रीमती रीना चक्रवर्ती, श्रीमती रेनू राबर्ट और श्रीमती संगीता मिश्रा ने एक साथ हमारे विद्यालय से सेवा निवृत्त होकर अपनी जिन्दगी के कारवां बदले।

१३ अप्रैल २०२४ की सुबह निर्मला कॉन्वेंट गर्ल्स इण्टर कॉलेज के लिये थोड़ी खुशी व थोड़ा गम लेकर आयी। खुशी इस लिये कि हमारी छः अध्यापिकाओं ने अपनी पूरी ईमानदारी लगन व परिश्रम से इस विद्यालय की सेवा की तथा इसे एक नये आयाम पर पहुँचाया। गम इस लिये कि अब हम उन्हें इस विद्यालय से विदा कर रहे हैं। दशकों से ये अध्यापिकाएँ इस विद्यालय निर्मला परिवार की अभिन्न अंग रही हैं। जिन्होंने हिन्दी, संगीत, संस्कृत अंग्रेजी, सामाजिक जैसे विषयों को पढ़ाकर अपने विशाल ज्ञान को छात्राओं तक पहुँचाया है। हमारे विद्यालय में आप सभी का प्रभाव कक्षाओं से कहीं आगे तक फैला हुआ है। आपके आकर्षक व्यक्तित्व, दयालुता, उदारता और संगीत ने हमारे विद्यालय के सभी लोगों के हृदय को छुआ है। आपके नैतिक मूल्य और अनुशासन हमारे लिये अनुकरणीय है।

आप सभी अध्यापिकाएँ अपने जीवन में अब एक नया कारवां बदल रही हैं। हम आप सबको बताना चाहते हैं कि आप लोगों की याद हम सब को आयेगी। सिस्टर पूनम के सशक्त शब्दों में “इस बदलते कारवां में, मैं आप सभी से कहना चाहूँगी कि हम आप सभी को अलविदा नहीं कह रहे हैं हम आप सभी को अपने साथ बनाये रखेंगे। अपनी जीवन यात्रा में आपके साथ बढ़ते रहेंगे तथा आप अपने विद्यालय से हमेशा जुड़े रहेंगे। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि अब आपके आगे का कारवां आनंद शान्ति और खुशियों से भरा हो।

सुनीता मैथ्यूस (स० अध्यापिका)

क्यों न मनाये दो बार “15 अगस्त”

आज भारत विशाल संसार के सम्मुख एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में खड़ा है हमारे विद्यालय में भी दो बार स्वतंत्रता दिवस समारोह बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। पहला कार्यक्रम 9 अगस्त को था। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि माननीय जिला विद्यालय निरीक्षक श्रीमती रति वर्मा जी थीं। जिसमें विद्यालय की चारों दलों की समस्त छात्राओं ने मार्चपास्ट का प्रदर्शन किया तथा मुख्य अतिथि ने सलामी ली। तत्पश्चात् विद्यालय की छात्राओं ने राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति से ओत-प्रोत रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की छात्रा तनु शर्मा एवं प्रभा अनुरागी ने किया। कार्यक्रम के अन्त में मुख्य अतिथि सुश्री रति वर्मा जी ने अपने अभिभाषण में कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की और छात्राओं के प्रदर्शन को उच्चकोटि के स्तर का बताया। साथ ही साथ उन्होंने डॉ० लेडी थॉमस और मदर टेरेसा जैसी महान नारियों का उदाहरण देकर हर क्षेत्र में आगे बढ़ते रहने के लिए छात्राओं का उत्साहवर्धन किया।

इसके बाद अगले दिन 9 अगस्त की यह सुबह सुहानी, मनमोहक, और उमंग भरी थी। उसी उत्साह के साथ विद्यालय में आगमन हुआ मुख्य अतिथि जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री शिव कुमार जी का, विद्यालय की प्रधानाचार्या सिस्टर पूनम सी०जे० और मुख्य अतिथि श्री शिव कुमार जी ने अपने करकमलों से ध्वजारोहण किया। मुख्य अतिथि ने अपने अभिभाषण में छात्राओं को उगते सूरज का उदाहरण देकर बताया कि जिस प्रकार सूर्य का उदय होता है, वह अपनी लालिमा धीरे-धीरे बिखेरता हुआ पूरे संसार को अपने प्रकाश से भर देता है, उसी प्रकार छात्राओं को भी अपना व दूसरों का जीवन प्रकाशमय बनाना है।

काँटों में भी फूल खिलाए, इस धरती को स्वर्ग बनाए,
आओ सबको गले लगाए, खुशी-खुशी स्वतंत्रता का पर्व मनाए।
जय हिन्द, जय भारत की प्रतिध्वनि से आत्मनिर्भर भारत बनाएं।



अर्चना सिंह
(प्रवक्ता)



बगियों के फूल आपके हैं.....

एक मजदूर की मेहनत से ही इमारतें खड़ी होती हैं। खेतों से लेकर फैक्ट्रियों तक जब परिश्रम की बात आती है तो वहाँ मजदूरों का ही नाम हमारे मन में आता है। हमारे विद्यालय की साफ-सफाई में तथा बगियों के फूलों को खिलाने में मजदूर वर्ग का श्रेय सम्मिलित है। उन्हीं के सम्मान में 9 मई 2024 को विद्यालय में मजदूर दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें उनके लिए प्रार्थना की गयी। और उन्हें पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

आइये हम इन्हें सिर्फ एक दिन का सम्मान न देकर बल्कि उनकी मेहनत की कदर करें। और उन्हें समाज में सम्मान दें। तभी हम सही अर्थों में मजदूर दिवस मना सकेंगे।

सुनीता मैथ्यूस (सहायक अध्यापिका)



“मातृ-पितृ दिवस”

सत्र २०२४-२०२५ के मध्य में एक विशेष दिवस ‘मातृ-पितृ दिवस’ मनाया गया। जिसे चार वर्गों में विभक्त किया गया। इसका एक कारण यह था कि विद्यालय की प्रत्येक छात्राओं को उनके माता-पिता के समक्ष अपनी प्रतिभाओं के प्रदर्शन द्वारा उनको सम्मानित किया जाये। यही सोच लेकर सर्वप्रथम कक्षा १० से कक्षा १२ तक की छात्राओं द्वारा मातृ-पितृ दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें ‘आजादी की तलाश’ विषय-थीम से सम्बन्धित विशेष तत्वों को नाटक, नृत्य एवं गीतों के माध्यम से बहुत ही उत्तम ढंग से दर्शाया गया। मुख्य रूप से यह संदेश दिया गया कि बेटियों पर जितनी बंदिशें लगाई जाती हैं, उतनी ही बंदिशें बेटों पर भी लगाई जाये ताकि वे सामाजिक अपराधों से बचें और बेटियों की रक्षा हो सके।

इसी क्रम में कक्षा ७ से कक्षा ९ तक की छात्राओं द्वारा शीर्षक “कल आज और कल” पर कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। जिसमें छात्राओं ने गुरुकुल शिक्षा से लेकर वर्तमान में दी जाने शिक्षा तथा भविष्य में आने वाली ए०आई० शिक्षा तक का सफर दर्शाया। साथ ही साथ यह संदेश दिया कि ए०आई० हमें तकनीकी ज्ञान तो दे सकता है परन्तु भावनात्मक ज्ञान नहीं दे सकता। अतः छात्राओं के सांस्कृतिक, तकनीकी एवं सामाजिक विकास के लिए दोनों का समिश्रण आवश्यक है।

अगला मातृ-पितृ दिवस कक्षा ३ से कक्षा ६ तक की छात्राओं द्वारा “सफलता का स्तम्भ, अनुशासन” विषय पर किया गया। जिसमें यह दर्शाया कि अनुशासन छात्राओं के लिए कितना अनिवार्य है। अनुशासन के बिना छात्राएं अपनी मंजिल को सफलता पूर्वक हासिल करने में असमर्थ रहेंगी। अतः अनुशासन ही सफलता का स्तम्भ है।

उक्त मातृ-पितृ दिवस को सफल और सार्थक बनाने के लिए कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रधानाचार्या सिस्टर पूनम द्वारा दिये गये लघु शिवर के माध्यम से माता-पिता व अभिभावकों को उनके कर्तव्यों और उनकी जिम्मेदारियों को पावर पॉइन्ट व प्रभावशाली वचनों से अवगत कराया तथा छात्राओं के व्यक्तित्व विकास के लिए माता-पिता व अभिभावक के सहयोग की अपेक्षा की। इस अर्थपूर्ण सेमिनार में अपनी कमजोरी और सच्चाई जानकर बहुत से अभिभावक भावविभोर हो गये। जिसकी दिल को छू लेने वाली झलकियां यूट्यूब चैनल पर विद्यमान हैं।



सोनिया नाज (प्रवक्ता)



“ऐलमनाई मीट 2024”

दिनांक ८ दिसम्बर २०२४ को निर्मला कॉन्वेंट गर्ल्स इण्टर कॉलेज के परिसर में विद्यालय की भूतपूर्व छात्राओं के दिलों में उठी। इस ऐतिहासिक दिवस में चारों तरफ चहल-पहल थी। सभी अपने जाने-पहचाने चहरे ढूँढ रहे थे तो कुछ अपने पुराने मित्रों को पाकर प्रसन्न हो रहे थे। कहा जाता है कि स्कूल का समय दोबारा नहीं आता किन्तु सारी उम्र हम उन दिनों की याद मन में रख वे दिन ताजा कर लेते हैं। इन्हीं दिनों को फिर से तरो-ताजा करने के लिए हमारी प्रधानाचार्या सिस्टर पूनम ने दूसरा प्रयास किया और वह काफी हद तक पूर्ण हुआ।

रविवार ८ दिसम्बर २०२४ प्रातः १० बजे सभी पुराने छात्र-छात्रायें विद्यालय के प्रांगण में उपस्थित हो गये। कोई बच्चों जैसा उछल रहा था तो कोई मस्ती के मूड में था सभी अपने पुराने दिन याद कर रहे थे। बड़ा ही मनोहर नजारा था। हॉल में प्रार्थना के बाद एक गेम के द्वारा इस सम्मेलन की शुरुआत हुई सभी ने अपनी सुन्दर आवाज में गीत गाये। अपने पुराने दिनों को सांझा किया। पुरानी सिस्टरस व अध्यापिकाओं से मिलकर उन्हें सम्मान दिया। सबसे मजे की बात तो तब थी जब पावर पॉइंट दिखाया गया। सभी ने पुरानी तस्वीरें देख बहुत मनोरंजन किया। ‘एक मछली पानी में गयी’ गेम खेलते समय तो सभी छाटे बच्चे ही बन गये। अंततः सभी छात्र व छात्राओं को सिस्टर जी ने सम्मान स्वरूप ‘स्मृति चिन्ह’ दिये जिसे पाकर सभी के हृदय खुशी से भर उठे, सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की और नई यादें अपने दामन में समेटे हमारे पुराने छात्र-छात्राओं ने अपने प्रिय विद्यालय से विदा ली।

आफरीन सिद्दीकी (सहायक अध्यापिका)



कुछ गौरवान्वित पल....

भारतरत्न और हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्म दिवस २५ दिसम्बर के अवसर पर तहसील एवं जनपद स्तर पर एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सबसे पहले तहसील स्तर पर दिनांक २० दिसम्बर २०२४ को राजकीय इन्टर कालेज, झाँसी में यह प्रतियोगिता सम्पन्न हुई।

प्रथम स्थान - योशिता मिश्रा, ११ बी

द्वितीय स्थान - पलक, ११ बी

इसके पश्चात जनपद स्तर पर यही प्रतियोगिता सूरज प्रसाद बालिका इन्टर कॉलेज झाँसी में दिनांक २३ दिसम्बर २०२४ को पुनः आयोजित की गई, अपने विद्यालय के गौरव को बढ़ाते हुए योशिता मिश्रा कक्षा ११-बी ने जनपद स्तर पर पुनः प्रथम स्थान प्राप्त किया। मुख्य विकास अधिकारी श्री जुनैद अहमद, विधायक श्री रवि शर्मा व नगर के अन्य गणमान्य नागरिक की उपस्थिति में उनके श्रेष्ठ प्रदर्शन के आधार पर दिनांक २५ दिसम्बर को विकास भवन में माननीय जिला अधिकारी श्री अविनाश कुमार जी के द्वारा योशिता मिश्रा को रु० ५०००/- की धनराशि का चेक प्रदान किया गया।

अर्न्तविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता

लोकमान्य तिलक कन्या इन्टर कॉलेज के संस्थापक स्वर्गीय सखाराम नेवालकर जी की पुण्यस्मृति के उपलक्ष्य में दिनांक १४/१२/२०२४ को यह प्रतियोगिता आयोजित की गयी। जिसका विषय था "सोशल मीडिया के कारण छात्रों में बढ़ती आत्महत्या की प्रकृति और अवसाद ग्रस्तता" इसके पक्ष तथा विपक्ष में प्रतिभागियों को अपने-अपने विचार प्रस्तुत करने थे। इस प्रतियोगिता में शहर के १२ विद्यालयों ने प्रतिभाग किया। जिसमें हमारे विद्यालय की दो छात्राओं ने स्पष्ट रूप से खुलकर अपने-अपने पक्ष-विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किए। छात्राओं के श्रेष्ठ प्रदर्शन को देखते हुए निर्णायक मण्डल द्वारा उन्हें पुरस्कार स्वरूप रु० ७५०/- रूपयों की धनराशि प्रदान की गयी। छात्राओं के नाम इस प्रकार हैं-

पक्ष - तनिष्का शर्मा, ११ बी

विपक्ष - पलक, ११ बी



अनीता सिंह
(हिन्दी विभागाध्यक्ष)

**Class
10th
Toppers
2023-24**



BHOOMI
91.83%



AKANSHA
91.5%



MANYA
90.83%

YOSHITA MISHRA
93%

PALAK AHIRWAR
92.33%



एक सफर ऐसा भी....

पिछले नवम्बर हमारे विद्यालय की कक्षा ११ व १२ की छात्राएं पिकनिक के लिए आगरा शहर गयीं। यह सभी के लिए एक अनोखा सफर था। हम सभी अपने अध्यापकों, अध्यापिकाओं और सिस्टर्स के साथ सुबह-सुबह ही ईश्वर का स्मरण करके आगरा के लिए रवाना हो गए। सभी उमंग से भरे हुए थे। सभी ने पूरे जोश और खुशी के साथ नाचते-गाते समय बिताया। हमने आगरा पहुँचकर सबसे पहले आठ अजूबों में से एक ताजमहल को देखा। ताजमहल की खूबसूरती और उसकी बारीक कलाकारी को देखकर सब हैरान रह गए। हम सभी ने यादगार के तौर पर वहाँ कई तस्वीरें लीं। सूरज की उन तेज किरणों में यमुना नदी की ठंडी हवाओं का एहसास बहुत ही सुहाना था। बस से ताजमहल तक जाने और वापस बस तक आने की इस लम्बी पदयात्रा के बाद हम लोग लाल किला देखने पहुँचे। लेकिन उसके भीतर जाने का समय समाप्त हो जाने के कारण हम वहीं पास के एक पार्क में गए और ढेर सारी मौज मस्ती करके शाम को आगरा को अलविदा कहकर झाँसी के लिए चल पड़े।

इस एक दिन में हम लोगों ने कई यादें इकट्ठा कर ली थीं और कई निशानियाँ भी। किसी ने चाबी का गुच्छा लिया तो किसी ने ताजमहल ही खरीद लिया। कोई अपने साथ सिर पर चोट लेकर आया तो कोई अपने जूते ही गुमा आया। कोई कॉटन कैंडी के लिए रोया तो किसी ने स्पाइट पीकर ही पूरा सफर तय कर लिया। लेकिन जो भी था, जैसा भी था। ये एक यादगार सफर था।



योशिता मिश्रा ११ बी





बाल विवाह मुक्त भारत

हमारे विद्यालय की छात्राओं को बाल-विवाह मुक्त भारत अभियान के प्रति जागरूक करने हेतु विद्यालय में दिनांक २७ नवंबर २०२४ को एक सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा ९ से १२ तक की छात्राएं सम्मिलित थीं। इस गोष्ठी में हम छात्राओं को इस विषय पर जागरूक करने हेतु मुख्य रूप से डिप्टी डाइरेक्टर - श्री सरवन कुमार, जिला विद्यालय निरीक्षक झाँसी - श्रीमती रति वर्मा, एस०एच०ओ० महिला थाना-श्रीमती किरन रावत, चाइल्ड वेलफेयर की सदस्य - श्रीमती परवीन, श्री हरि सक्सेना और श्री राजीव शर्मा जी आमंत्रित थे।

सर्वप्रथम एस०एच०ओ० श्रीमती किरन रावत जी ने बाल-विवाह और उससे जुड़ी बातें हम सभी को समझाईं। एक वीडियो के माध्यम से सभी छात्राओं को बाल-विवाह रोकने के तरीके बताए। और फिर सभी ने बाल-विवाह मुक्त भारत का निर्माण करने के लिए शपथ ली। एस०एच०ओ० जी ने हमें बताया कि कम उम्र में शादी होने से लड़कियाँ शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं रहती हैं। इसके अतिरिक्त बाल-विवाह कानूनी जुर्म भी है। हम अगर कहीं पर भी बाल-विवाह होता हुआ देख रहे हैं तो हमें इस हेल्पलाइन नम्बरों पर बताना है-

टोल फ्री नम्बर - १०९ और १००

कंट्रोल रूम का नंबर - ११२

महिला हेल्पलाइन नंबर - १०९०

चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर - १०९८

अन्त में हमारे विद्यालय की हेड गर्ल अनन्या ने बाल-विवाह मुक्त भारत अभियान के सभी अतिथिगण का आभार व्यक्त किया।

रिषिका ११ ए



मेरी यादगार पिकनिक-‘चंदेरी, मध्य प्रदेश’



मैं अपनी दूसरी पिकनिक “चंदेरी” के अनुभव के बारे में बताना चाहती हूँ। इससे पहले कक्षा ९ में मेरी पहली पिकनिक ज्वालियर की थी। उसमें मेरे पहले अनुभव के अनुसार बहुत मजा आया था। दूसरी बार हम लोग चंदेरी गये। वहाँ पर स्त्री-२ की शूटिंग हुई थी। सबके अन्दर खुशी और जाने का उत्साह था। चंदेरी से पहले हमने स्पेस म्युजिम देखा। हम लोग राजघाट डेम से घूमते हुए चंदेरी पहुँचे। किले में हम सबने खाना खाया फिर हम लोग साड़ी के कारखाने के लिए रवाना हुए। हमने साड़ी बनाने की प्रक्रिया से साड़ी बेचने तक की प्रक्रिया को देखा। चंदेरी साड़ियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। वहाँ से लौटते समय सिस्टर ने हम सबको बहुत सारी चीज खाने-पीने की दी। विशेषकर आगरा का पेठा, जिसे (सीनियर पिकनिक जब आगरा गई थी) वहीं से खरीदा गया था। जो हमारे लिए सुखद सरप्राइज बन गया। जिसने ताजमहल के अदृश्य दर्शन करा दिये। फिर चंदेरी से आते समय एक ढाबे पर सिस्टर ने बच्चों को चाय पिलायी उस चाय से बच्चों में और अधिक उत्साह भर गया और पूरे रास्ते हम मनोरंजन करते हुए आये। अंत में मैं सभी सिस्टर और अध्यापिकाओं को धन्यवाद देती हूँ। जिनकी देखरेख ने हमारी इस ट्रिप को शानदार याद में बदल दिया।



न्यासा साहू १० बी

अनूठा समर कैंप

दिनांक २२ मई से ३१ मई तक विद्यालय परिसर में आयोजित ग्रीष्म कालीन शिविर, छात्राओं के लिए एक अनूठा अनुभव था। जहाँ छात्राओं ने भरपूर मनोरंजन करते हुए, कुशल नेतृत्व, टीम वर्क, के साथ विभिन्न प्रकार के इनडोर और आउट डोर खेलों को खेलते हुए अपनी प्रतिभाओं को निखारा। जिसमें विशेष रूप से Skill development, English speaking course, Zudo Karate, Art & Craft, Yoga, Music Class और Group Dance मुख्य आकर्षण के केन्द्र बनें। छात्राओं के लिए यह एक अनूठा समर कैंप इस लिए भी था क्योंकि प्रत्येक दिन विभिन्न तरह के स्वल्पाहार वितरित किये गये, जो कि उनके लिए Surprise थे।



श्रीमती संध्या सविता
(सहायक अध्यापिका)



बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

लड़की कोई इंसान नहीं है। लड़की का कोई मान नहीं है। इसका कोई सम्मान नहीं है। आज हमारे देश की लड़कियाँ हर मुकाम पर पहुँच चुकी हैं। चाहे वे खेल के मैदान हो या फिर राजनीति हो। आज भी बेटी को बेटों के समान दर्जा क्यों नहीं दिया जाता है। जगह-जगह पर बेटे और बेटी में भेदभाव किया जाता है कि परिवार में लड़के के जन्म पर खुशियाँ मनायी जाती हैं। और लड़की का जन्म अशुभ, परिवार पर बोझ चिंताजनक दुःख मूलक समझा जाने लगा है। पुत्र प्राप्ति की इच्छा ने लोगों को इस तरह जकड़ा हुआ है कि वे कन्या भ्रूण हत्या करने से कभी नहीं कतराते। यह सब विकृत मानसिकता के सूचक है।

आज बेटियों के संरक्षण की आवश्यकता पड़ रही है। बहुत किस्मत वाले हैं वे लोग जिन्हें बेटी मिली है। आज के समय में बेटियों के साथ होनेवाले हर अपराध का केवल एक ही कारण लोगो की गलत मानसिकता है। इस गलत मानसिकता को बदलने के लिए बेटियों का शिक्षित होना बहुत आवश्यक है।



रमशा खान कक्षा 9

गलतियाँ गलत नहीं

गलतियाँ, गलतियाँ किससे नहीं होती। कभी किसी पर स्वयं से ज्यादा विश्वास करने की गलती, तो कभी गलत निर्णय लेने की गलती, कभी किसी से बहुत ज्यादा उम्मीदें रखने की गलती या कभी खुद को दूसरों से कम समझने की गलती। हम अपने संपूर्ण जीवन में अनेकों गलतियाँ करते हैं, लेकिन उन गलतियों को स्वीकार करने का साहस बहुत कम लोगों में होता है। गलती करना बुरा नहीं है, लेकिन उसे स्वीकार न करना बड़ी गलती बन जाती है। जब स्वयं की गलती हो तब माफी मांगने और गलती मानने में झुकना कमजोरी नहीं, बल्कि एक ताकत है। गलती को अपना दुश्मन न मानें, उसे एक शिक्षक मानें, जो आपको आपकी हर एक गलती पर एक नई सीख देती है।

“अगर आप अपनी गलती से सीख लेते हैं, तो गलतियाँ आपके लिए सीढ़ी हैं। और यदि आप अपनी गलती स्वीकारना ही नहीं चाहते तो, गलती एक सीधी सड़क की तरह जाती है, जिस पर आप समय के साथ आगे चलते तो जाते हैं, लेकिन कभी आसमान की ऊँचाइयों को छू नहीं पाते।”

गलती करना इंसान का स्वभाव है, लेकिन गलती को स्वीकार कर उसे सुधारना इंसानियत है। जब आप अपनी गलती को स्वीकार कर उससे सीखते हैं, तो आप न केवल खुद को बल्कि अपनी जिंदगी को भी बेहतर बना सकते हैं।

“गलतियाँ वही करते हैं, जो प्रयास करते हैं।”



नैन्सी 11 बी

दुःख का साथी

एक ऐसा व्यक्ति जो हर किसी की अपनी जिंदगी में होता है। मेरी जिंदगी में भी एक सच्चा मित्र है। शायद एक सच्चा मित्र वही होता है जो हमारे सुख में तो नहीं पर दुःख में जरूर काम आए, जो हमारे गलत में तो नहीं हमारी सच्चाई में हमारा साथ दे। एक सच्चा मित्र मिलना क्या मुश्किल है? हाँ या न पता नहीं, पर एक सच्चा मित्र वही है जो हमारी जिंदगी में हमारे साथ हो और हमारा व उसका साथ हमेशा का हो। एक सच्चा मित्र इसलिए आवश्यक है ताकि हम उसके साथ अपने दुःख-सुख की सभी बातें उसे बता सकें सच्चे मित्र तो सभी के पास होते हैं क्या आपको पता है कि ये हमारे जीवन भर हमारे साथ रहेंगे। स्कूल के मित्र तो स्कूल के बाद बिछुड़ जाते हैं। स्कूल के बाद आगे चलकर फिर हमारी जिंदगी में नए लोग आते हैं लेकिन एक सच्चा मित्र वही होता है। जो हमेशा हमारे



साथ रहे। एक सच्चा मित्र मिलना बहुत मुश्किल है पर असंभव नहीं। जिंदगी में बहुत से मोड़ आयेगें पर इन मोड़ों पर जो आपको साथ दे, वही है आपका एक सच्चा मित्र।

खुशी कुशवाहा 9 ए

ज्ञान ही शक्ति है

ज्ञान एक ऐसी चीज है। जो जितना बाँटे उतना ही बढ़ता है। ज्ञान से ही सही गलत, अच्छे बुरे का पता चलता है। इसके अलावा ज्ञान ही वह शक्ति है जो हमें सारे कामों में साथ देती है गलत कामों से रोकती है और अच्छे कामों की ओर ले जाती है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो ज्ञान को महत्वपूर्ण नहीं समझते। लेकिन जो लोग ज्ञान को महत्व देते हैं वही सफलता को प्राप्त करते हैं। संसार में ज्यादा ज्ञान प्राप्त करने वाला व्यक्ति ही शिक्षा को प्राप्त नहीं करता बल्कि कम ज्ञान वाला भी शिक्षा को प्राप्त कर सकता है क्योंकि जो ज्ञान को प्राप्त करता है वही शिक्षित नहीं बल्कि कम ज्ञानी भी शिक्षित होता है।

ज्ञान ही हमारे देश को शक्तिशाली बनाता है। ज्ञान वह शक्ति है जो हमें जमीन से आसमान तक ले जाए। ज्ञान की तुलना में धन बहुत छोटी चीज है क्योंकि जिस व्यक्ति के मन में ज्ञान की शक्ति होती है, वह एक अच्छे देश का निर्माण कर सकता है लेकिन अधिक धन वाला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। इसलिए ज्ञान को एक महत्वपूर्ण उपकरण मानकर जीवन में अपनाना चाहिए।



फलक नाज खान 11 बी

‘मेरी’ टीचर



माहेनूर कक्षा-3

मेरी टीचर अच्छी टीचर, सभी विषय हमें पढ़ाती। साथ पढ़ाती साथ खिलती, बहुत प्यारी लगती। प्यारी सी मुस्कान लिए, हमें सब कुछ सिखाती। हमेशा नई बातें बताती, रोज नया ज्ञान देती। एक अच्छे इन्सान बनना, ऐसा हमेशा बोलती। सदा बड़ों का आदर करना, ऐसा हमें बताती। ‘मेरी’ नाम है उनका, सभी कहते मेरी टीचर।



सुहानी सुबह

सूरज की किरणे आती है,
तब सारी कलियाँ खिल जाती है।
अंधकार जब खो जाता है,
सब जग सुन्दर हो जाता है।



चिड़िया गाती मिलजुल कर, उनके बहते मीठे स्वर।
ठंडी-ठंडी हवा सुहानी, चलती है कैसी मस्तानी।
यही प्रातः की सुख बेला है, धरती का सुख अलबेला है।

मनु 6 ए

Class 12th Toppers 2023-24



KARISHMA KUSHWAHA
93.44%



DIVYA YADAV
91.80%



TANISHA SHRIVAS
88.40%



DEEPIKA KUMARI
85.6%



KAJAL YADAV
85%



MAUSMI SAHU
83%

बाकी सब ठीक है।

लिखने की कोशिश करता हूँ पर लिख नहीं पाता।

“बाकी सब ठीक है।”

दिखने की कोशिश करता हूँ पर दिख नहीं पाता।

“बाकी सब ठीक है।”

कहने की कोशिश करता हूँ पर कह नहीं पाता।

“बाकी सब ठीक है।”

सड़के टूटी है गड्डे हैं पर रोड टैक्स देना पड़ता।

“बाकी सब ठीक है।”

बिजली का कनेक्शन है, पर कटौती की भरमार है।

“बाकी सब ठीक है।”

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का नारा है, पर फिर भी बंगाल कांड है।

“बाकी सब ठीक है।”

वजीफा चाहिए, अच्छा स्कूल चाहिए

पर फीस जमा नहीं करना चाहता।

“बाकी सब ठीक है।”

घर हमारा, मेन्टनेन्स हमारा है, पर हाउस टैक्स देना है।

“बाकी सब ठीक है।”

ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट, कर लो पर जॉब नहीं है।

“बाकी सब ठीक है।”

योग्यता है पर धन, जुगाड़ व मक्खन नहीं है।

“बाकी सब ठीक है।”

भगवान भी परेशान है, मुखौटा लगाये इन्सान है।

“बाकी सब ठीक है।”

“बाकी सब ठीक है।”

राकेश दुबे (प्रक्वता)

मेरी बेटी मेरी शान

बेटी बेटों से कम नहीं होती है जी,

बेटा हीरा है तो बेटी मोती है जी।

ना जाने कब सब को होगा ये ज्ञान,

बेटी होती है माता-पिता का अभिमान।

जिन्होंने भी इन्हें कम समझा है,

उनकी यह गलती है।

त्याग क्षमा बलिदान के पथ पर हरदम चलती है।

ये भी बढ़ाती है मान-सम्मान,

बेटी होती है, माता-पिता का अभिमान।

एकता वरुण 7 बी

मैं एक लड़की हूँ

मैं एक लड़की हूँ।

मैं कहां किसी को जचती हूँ।

कहाँ सब को अच्छी लगती हूँ।

मेरा कहाँ एक ठिकाना है।

कहाँ सब को सच्ची लगती हूँ।

मैं रुकती नहीं हूँ, मैं किसी के सामने झुकती नहीं हूँ।

मैं अपने चरित्र को बचाती हूँ, और सम्मान से सर उठाती हूँ।

मुझे रोकना छोड़ दो, मुझे यूँ कोसना छोड़ दो।

मुझमें विनम्रता है, मुझमें सहनशीलता है।

मैं वायु की तरह भी उड़ सकती हूँ।

मैरा सम्मान सबसे ज्यादा है,

कुछ ऐसा औहदा खुदा ने मुझे नवाजा है।

सफिया खान 11 बी

एक वर्ष की कीमत उस विद्यार्थी को पता होती है, जो अनुत्तीण हो गया हो।

एक महीने की कीमत उस माँ को पता होती है, जिसने 9 महीने से पहले बच्चे को जन्म दिया हो।

एक हफ्ते की कीमत उस अखबार के सम्पादक को पता होती है, जिसे एक साप्ताहिक अखबार निकालना हो।

एक दिन की कीमत उसे पता होती है, जिसे कल फांसी होने वाली हो।

एक घंटे की कीमत उस विद्यार्थी को पता होती है, जो परीक्षा भवन में बैठा हो।

एक क्षण की कीमत उसे पता होती है, जिसकी ट्रेन अभी-अभी निकल गई हो।

एक सफर



नितिशा वर्मा 11 बी

सपनों की उड़ान

मनचला पंछी बन जाऊँ,
उड़ चलो हवा से
सारे सपने पूरे कर लूँ।
बनूँ पुलिस पद लिख कर,
करूँ पूरे सारे सपने,
छू लूँ आसमान उड़कर
खुश हो जाए सारे अपने।
नई लहर, नई उमंगे,
जिन्दगी का हिस्सा है,
दुनिया में मशहूर बन जाऊँ,
बाकी सब तो किस्सा है।
सपनों की उड़ान बहुत लम्बी है,
इसमें भटक न जाना,
दोस्ती यारी भी काम की
पर इसमें भटक न जाना।



दीया धिरोलिया 10 बी

मुझे उड़ने दो

मुझे भी उड़ना है पर उड़ ना सकी,
क्यों काटा मेरे पंखो को,
मुझे भी उड़ना है।
भगवान ही के घर से आते हैं, बेटे और बेटियाँ,
फिर क्यों है भेद-भाव बेटे और बेटियों में?
क्यों नहीं पढ़ सकती बेटियाँ?
क्यों नहीं बढ़ सकती बेटियाँ?
ऐसा क्या है बेटों में?
जो नहीं कर सकती बेटियाँ?
बेटों और बेटियों में भेद-भाव क्यों है?
कोई मुझे बताओ तो।
बेटे एक कुल को संभालते,
तो बेटियाँ दो कुल को संभालती है।
मत मारों मुझे, मत काटो पंखो को मेरे,
मुझे भी उड़ना है स्वच्छन्द दूर तलक गगन में,
क्यों भूल गया यह जग सारा।
इनसे ही है। यह जग सारा,
ये नहीं तो जग अंधियारा।
बेटियों बिना है सब अधूरा।



मानवी 8 ए



हमारी प्यारी माँ

कितनी प्यारी होती है हमारी प्यारी माँ।
सारी खुशियाँ समेटकर हमें देती है वो
हमारी चाह को पूरा करती है वो,
वो और कोई नहीं मेरी माँ है वो।
थोड़ा माँगो तो देती है बहुत,
मुझे चोट लगने पर रोती है बहुत,
मुझसे ज्यादा दर्द होता है उसे,
कितनी प्यारी होती है माँ।
माँ ही है जो हमें खिलाती,
पढ़ाती और चलाती है।
हमारी खुशियों के लिए वो
अपनी खुशियाँ कुर्बान करती है।
हमारी चिंता, फिक्र सबसे ज्यादा
उसी को होती है।
कितनी प्यारी होती है हमारी प्यारी माँ।



रिजवाना बानों 8 बी

दूसरों की खुशी में अपनी खुशी

यह बात है दो साल पहले वर्ष 2022 की। नये साल से एक दिन पहले छोटी प्रिया जिसकी उम्र 90 वर्ष थी। वह अपने परिवार के साथ बाहर गई थी। वहाँ उसने देखा कि दुकान के बाहर एक छोटा 3 साल का बच्चा व एक बूढ़े दादा थे। वे लोगों से भीख मांग रहे थे। और वह छोटा बच्चा केक की दुकान के बाहर केक देखकर रो रहा था। छोटी प्रिया जब वहाँ से गुजरी तब उसके पापा ने कुछ रुपये दिये। छोटी प्रिया को लगा कि यह रुपये मेरे प्रयोजन के लिए पर्याप्त नहीं हैं। उसने सोचा कि कल वह उस बच्चे की मदद जरूर करेगी उसने किचन में मम्मी की मदद की। मम्मी ने खुश होकर प्रिया को 40 रुपये दे दिये। और अब उसने पापा का सर दबाया व अपनी बड़ी बहन की स्कूल के कार्य में मदद की ऐसे करके उसने 900 रुपये एकत्र कर लिए। अब वह केक की दुकान पर गई तो उसकी मनपसंदीदा पेस्ट्री केवल एक ही बची थी जिसका दाम 900 रुपये था। लेकिन उसने उसे न लेकर दूसरा खाने पीने का सामान लिया व बूढ़े दादा जी को दे दिया जिसे देख छोटे बच्चे के चेहरे पर प्यारी सी मुस्कान आ गई। जब वह घर पर पहुँची तब उसके माता-पिता ने कहा, “बेटा हमने जो तुम्हें पैसे दिए थे वह कहाँ है?” तब बच्ची ने प्यारी सी हँसी के साथ जबाब दिया कि उन रुपयों की मुझसे ज्यादा जरूरत उस छोटे बच्चे व दादा जी को थी। माता-पिता को यह बात सुनकर काफी अच्छा लगा और अपनी बेटी पर गर्व भी हुआ।



इशरत 8 बी



छात्राओं ने गाए देशभक्ति के गीत

इसकी विविधा
कविताएँ गायें इन
सामने में खल्लिख
दिवस पर काव्यम
हस्ता। साकारों ने
देश भक्ति के गीत
गाए। मुझ कविता
जिन विद्यालय
निरीक्षण रित्त बयन,
उपस्थानाएँ विस्तर
सुन्य, सभासक विस्तर। उमिन्, विस्तर को अति मीठ। यो। संनयन सतु
सर्वो एवं दाम अनुसारे ने विष्णु। सतु।



निर्मला कॉन्वेंट स्कूल, स्टेडियम और
खेलो इण्डिया ने जीते हॉकी मुकाबले

अनुशासन श्रेष्ठ जीवन की आधारशिला

प्रिय बच्चों अनुशासन वह निर्मल अग्नि है जो मेहनत को सफलता में परिवर्तित करती है। अनुशासन ही वह सीढ़ी है जिसमें मानव सभ्यता सम्भव हो पायी और इसके सहारे हमारा कृमिक विकास भी सम्भव हो पाया। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री ने कहा था कि “ अनुशासन राष्ट्र का जीवन रक्त है।” प्रकृति के समस्त कार्य व्यापार किसी न किसी नियम से बंधे हुए हैं। आप हमारे राष्ट्र के मुख्य स्तम्भ हैं और यदि आप सभी में अनुशासन की कमी होगी तो हम समझ सकते हैं हमारे देश का भविष्य कैसा होगा? सच्चाई यह कि बिना अनुशासन के सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। अतः अपने और देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है-

- “अनुशासन ही अपने जीवन के उद्देश्य और उपलब्धि के बीच का सेतु है।”
- “हम दबाब से अनुशासन कभी नहीं सीख सकते।”
- “अनुशासन और गतिशीलता की आदतों को विकसित करें। अपने दृढ़ विश्वास को टूटने न दें।”
- “ बहानों से आज आसान तो होगा लेकिन कल, कठिन और अनुशासन से आज कठिन होगा पर कल, आसान।”
- अपने अन्दर अनुशासन व सहनशीलता लायें।

श्रीमती सेलीना स्वामी
(सहा अध्यापिका)



जीना सीखा मेरी वार्ड से

माँ तेरे ही कर्मों से सीखा है, हम सब ने भी आगे बढ़ना थोड़ा रूकना हाथ बढ़ाना, हाथ बढ़ाकर साथ निभाना कभी न टूटे कभी न छूटे, बस येसू नाम से बढ़ते जायें येसू संग अपना भी साया रखना माँ, राह दिखाना साथ निभाना इतनी शक्ति देना माँ, तेरी ही छाया से बदलें हम, इस धरती की काया को, माँ तेरी ही राह पर बढ़ते जाये, हर बालिका को सफल बनाये, कभी न हारा, सभी का सहारा

F.M.W. Group हमारा प्यारा

हम सब उसकी है शान

तू ही तो है हमारा अभिमान

सच्चे मन से कार्य करें, यही हमारा है अभियान।

ट्रीजा हाईफील्ड

(को-ऑर्डिनेटर, एफ०एम०डब्लू)



एक मैसेज-रिंगटोन

चाय का प्याला उठाया ही था कि मोबाइल पर मैसेज की रिंगटोन बजी। न चाह कर भी मैंने मैसेज देखने के लिये मोबाइल हाथ में ले लिया और मैसेज देखने लगा। मैसेज में यू-ट्यूब की एक लिंक थी। जिसे मैंने खोला तो कोई एक साधू की आवाज सुनाई दी। वो एक किस्सा सुना रहे थे। ‘मैं एक बार एक हाईवे के पास एक मकान में गया मैंने वहाँ देखा कि दो बालक सड़क के पास आती जाती कारों को देखते और फिर आपस में बातें कर रहे थे। मैं उनको देखते हुए मकान में चला गया। कुछ देर बाद जब मैं वापस उस हाईवे सड़क से गुजरा तो मैंने देखा कि वही दो बालक आपस में लड़ रहे हैं।

मैं उनके पास गया। उन दोनों को मैंने अलग-अलग किया, फिर मैंने उनसे पूछा कि कुछ देर पहले आप दोनों इतना उछल-उछल कर खेल रहे थे। अचानक ऐसा क्या हो गया कि आप दोनों लड़ने लगे? उसमें से एक बालक बोला, “इसने मेरी कार चुरा ली।” “कार चुरा ली?” मैंने आश्चर्य से उनसे प्रश्न पूछा। तो दूसरे बालक ने उत्तर दिया, “हाईवे पर आने जाने वाली कारों को हम अपनी-अपनी बता रहे थे.....ये वाली कार मेरी, और जमीन पर छड़ी से एक लाइन खींच लेते।” इस तरह जितनी भी कारें निकलती हम छड़ी से लाइन खींचते जाते। आखिर में हम उन खींची गई लाइनों की गिनती कर लेते। जिसकी ज्यादा होती। वही उन कारों का मालिक होता। लेकिन इसने मेरी वाली कार को अपनी बताकर मेरी कार चुरा ली।

साधु द्वारा बताया गया किस्सा यहीं समाप्त हो गया था। उसके आगे उनके बीच क्या बात हुई यह मालूम नहीं चल सका। लेकिन यह किस्सा मेरे मन के किसी कोने में सुरक्षित था। बच्चों वर्तमान में इस किस्से को समझे तो कई तरह से ये किस्सा छात्राओं के जीवन से जुड़ जायेगा। जैसे आज के इस आधुनिक जीवन में माता-पिता के साथ बच्चे में भी शिक्षा और करियर की प्रतिस्पर्धा में लगे पड़े हैं। और इस प्रयास ने, विशेषकर बच्चों पर भारी दबाव डाल दिया है। क्योंकि माता-पिता, बचपन से ही अपने बच्चों को बड़े-बड़े खाव और उदाहरण दिखाकर उनसे उसी प्रकार के प्रदर्शन की अपेक्षा करने लगे हैं। यही कारण है कि बच्चे अपनी योग्यता के परे सीधे-सीधे उस किस्से में बताई गई आती-जाती कारों को अपना मानकर उसके मालिक बन जाते हैं। मानसिक तनाव और अव्यवस्थित दिनचर्या उनको प्रभावित करने लगती है। और वे गम्भीर कदम उठाने लगते हैं। बच्चों जबकि वास्तव में यह एक स्वप्न है। सच्चाई नहीं है। आपके पास बहुत समय है आप समय का सदुपयोग करें। अपना सारा ध्यान सिर्फ आने वाली परीक्षाओं की तैयारी पर लगायें। अपने अन्दर छुपी हुई योग्यताओं को पहचानें। ख्याली पुलाव न पकाएं। दूसरों को देखकर उनके जैसा न बनें बल्कि वो कैसे उस मुकाम पर पहुँचे हैं, उस पर फोकस करें। ऐसा करना सम्भव तो नहीं है पर असम्भव भी नहीं।

आनन्द एडवर्ड



सफर 'वाणिनी से वक्ता तक'

जब मैं पहली बार विद्यालय प्रांगण में आयी तो आँखों में आँसू थे। बार-बार रोते हुये घर जाने की जिद थी, लेकिन समय कब, कैसे और इतनी जल्दी आगे बढ़ गया पता ही नहीं चला। धीरे-धीरे सब अच्छा लगने लगा। विद्यालय प्रांगण, शिक्षक, शिक्षिकाएँ इन सभी के प्यार और दुलार से आगे बढ़ना मैंने शुरू किया। जब मैं आगे की कक्षाओं में आई तो कैप्टन, हैड गर्ल के बारे में जाना और मन में एक इच्छा जाग्रत हुई कि मैं भी हैड गर्ल बनूँगी। तभी से मन में चाहत थी। और एक दिन अचानक जब विद्यालय की प्रधानाचार्या सिस्टर पूनम ने हैड गर्ल के लिये मेरा नाम लिया तो मैं एक मिनट के लिये तो स्तब्ध रह गयी, क्योंकि बचपन में देखा गया मेरा सपना पूरा हो गया था। मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। हैड गर्ल बनने के साथ ही अनेको जिम्मेदारियाँ भी थी।



हैड गर्ल बनने के साथ ही जो प्यार व सम्मान छोटी बड़ी सभी छात्राओं से मुझे मिला, वो मैं कभी नहीं भूल सकती और यही कारण है कि मैं नियमित रूप से विद्यालय आने लगी। प्रतिदिन विद्यालय आने से मेरा मन पढ़ाई में लगने लगा और साथ ही साथ एक आदर्श बनने के लिये सभी गुरुजनों एवं सिस्टरस का आशीर्वाद मिलने लगा। इसके लिए मैं जीवनपर्यन्त इस विद्यालय की ऋणि रहूँगी। पहले मैं हर कार्यक्रम में नृत्य में भाग लिया करती थी। जहाँ नृत्य होता था, वहाँ अनन्या होती थी। क्योंकि मेरा शौक नृत्य करना था। और मुझे विद्यालय के सर्वोत्तम नृतिका (वाणिनी) के रूप में जाना जाने लगा था। लेकिन हैड गर्ल बनने के बाद सिस्टर पूनम ने मुझे ऑफिस में बुलाया और कहा, “अनन्या तुम्हें आज से नृत्य नहीं वरन माईक पर बार-बार बोलना होगा।” उस समय मैंने हामी तो भर दी लेकिन बिना पेपर पर देखे और बिना अटके बोलना, मेरे डर का कारण बन गया। मैं नर्वस रहने लगी, पर सिस्टर पूनम और गुरुजनों का प्रोत्साहन एवं प्रेरणादायक शब्दों ने मुझे 'वाणिनी' से 'वक्ता' बना दिया। इस सत्र में जितने भी बड़े, छोटे और विशेष अवसर पर हुए, विद्यालय के सभी कार्यक्रमों में, मैंने पूरे आत्मविश्वास के साथ बिना किसी हिचकिचाहट के, अपना शतप्रतिशत प्रदर्शन किया। जिसकी सराहना और आशीर्वाद मुझे मिला। मैं आप सभी को आभारी हूँ।



अनन्या 12 बी (हैड गर्ल)

एक डांस साथ में...

जब हमने Captainship ली थी, तब हमें पता चला कि टीम वर्क किसे कहते हैं। क्योंकि 9५ अगस्त के दिन जब हमारे विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस मनाया जा रहा था। तब सभी कप्तानों-उपकप्तानों ने साथ में मिलकर कार्य किये। तथा वह दिन मेरे लिए बहुत खास भी था क्योंकि उस दिन मैं एक कप्तान के रूप में अपने दल का नेतृत्व कर रही थी। और सारे कप्तानों द्वारा मुख्य अतिथि को सलामी दी जा रही थी। तथा उस दिन सभी कप्तानों ने साथ में एक साथ देशभक्ति नृत्य भी किया था। 9५ अगस्त की तैयारी के लिए सभी कप्तानों ने साथ में मिलकर कार्य किया। हमारी यह एकता साल भर बनी रही। और सबके असमंजस का कारण भी, जब विद्यालय में टीचर्स डे की तैयारी चल रही थी। तब सारे दिन सभी कप्तानों ने बहुत मेहनत की और हमने बहुत घण्टे एक साथ बिताए। इस अन्तराल में हमारे विद्यालय की प्रधानाचार्या सिस्टर पूनम हमारे साथ रही और हमारे सुझावों को गति और नई दिशा प्रदान की। और टीचर्स डे के कार्यक्रम को सफल बनाने में उन्होंने और विद्यालय की हैड गर्ल अनन्या ने हमारा मार्गदर्शन किया। अपने-अपने दल का नेतृत्व करना हमारे लिए बहुत स्मरणीय रहा। उस एक डांस ने हमें सदा का साथ सिखा दिया।



रिया साहू 12 ए
(कैप्टन पीला दल)



Your Captain Greens!

In my opinion leadership is not just about holding the position as a leader but it is a great responsibility. Leadership has taught me the value of teamwork, sacrifice and humility.

As a captain of the college, my most memorable experience was organizing a Teacher's Day. As a leader my team and I paid very close attention to everything and we can't forget Sr. Poonam who helped us and motivated us much all through our journey. She told us about the theme of the event "MIRROR" which was truly a rare and unique theme; we just went with this idea and planned everything according to the theme. We prepared handmade cards for our teachers and Sisters, we just put the glass on the card and addressing each Sister and teacher, we wrote "I delight mirroring myself in you," We also planned a few games which were interesting. Working for many hours together created a special bond among us which has never broken. The Teachers were touched and thoroughly enjoyed the function. One thing I have learned from organizing various events is that leadership is not about doing yourself but about guiding others toward a shared goal. As in charge of the Green House, which kept getting good points in most of the activities even without me at times, I would like to thank all my tiny warriors who fought tough competition and made me proud. I learned the importance of clear communication and organizational skills. In my experience leadership is not a position but a mindset. It is an ongoing journey of self-improvement. In tough times Sr. Poonam told us that everyone throws stones at a fruitful tree. We should at times ignore negative criticism and keep moving forward towards the goal with focus and single-mindedness.



These types of experiences have shaped me into a more confident and compassionate individual, ready to tackle challenges and inspire others to do the same.

Prabha Anuragi Class 12 B
(Green House Captain)

Champions of the Year Green House



A Mixed Bag

Life is a mixed bag of good and bad time so is friendship. A mixed bag means a collection of things that are different and may not work well together. On our life's journey we may not face good all the time. We have to be prepared for bad and worse time gifted to us by our good and bad friends. Yes, I say, bad friends who can be opportunists, unsupportive, manipulative, toxic and hurting at times. As a leader we face all kinds of people on the way. While on the other hand we are fortunate to get good friends who are loyal, genuine, motivating, entertaining and do not leave us at any cost.

My journey of leadership has been a mixed bag of all sorts of experiences. But I would like to thank all my teacher moderators who guided me and house students who have battled the whole year and taken my house to the heights. I have grown in recognizing people and deal with them. Our school gives us not only bookish knowledge but we also attain



skill development. Thanks to Sisters and teachers for choosing me to hold the responsibility of this prestigious school.

Pooja Sagar Class 12 B
(Blue House Captain)

The Power of Unity

I feel fortunate to share my experience as a captain of Red House. I am delighted to share that I discovered a bond and unity among the captains right from the first event that we organized i.e. 15th August. Ananya, our head girl did much work with us and seeing the leader working with us, we too supported her wholeheartedly. On our trip to Agra too we were together and enjoyed thoroughly. Everyone noticed this unity and appreciated us for this. My vice-captain Himanshi Srivas too supported me a lot and even on my absence took responsibility.



Tanu Sharma Class 12 B
(Red House Captain)

First Runner up of the Year Red House



Be The Voice

Sr. Poonam informed the school that we are going to have International visitors and Hindi will not be understood at all. We told her, "What's the problem? We will prepare a programme in English as we know English". The whole school eagerly awaited the arrival of Sr. Veronica CJ, the Mother General of CJ congregation and her assistant, Sr. Estela CJ. This was a unique program indeed and we chose the theme "Be the Voice." The programme began with a quarrel between evil and good depicted by them in Angels and devils. The devils had manipulated people into working for their own selfish interests, while the Angels, in fear, prayed to God. God suggested that they churn a mountain with the help of the devils to find a solution to all problems. As they churned the mountain, voices emerged one by one, presenting the condition of society through dances and skits. The anchor requested the audience to "be the voice" for those who are voiceless and oppressed in society.

In the end, the Angels discovered a book titled, "The Secret," containing just one sentence: "God has no hands and feet today and we are His hands and feet to spread His goodness." The programme conveyed a powerful message that in our life we have to continue battling with evil yet win and spread God's kingdom. Sr. Veronica appreciated us for the programme and told us to follow Mother Mary Ward's legacy of courage and truthfulness.



Aradhya Vanshkar 11 B

Unleashing Creativity (Role Play)

On 22nd July 2024, a fancy dress competition was held in the Nirmala Convent compound. The students of Class 6 (English Medium) actively embraced their roles, demonstrating a strong understanding of the characters they portrayed. Simple costumes and props were used to enhance the authenticity of their performances.

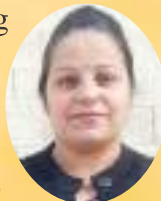


This role play activity helped to improve students' public speaking skills, creativity, and ability to express emotions effectively. It was a valuable learning experience for everyone involved.



Neha Chokra

Eng. Medium
(Ass't Teacher)



Nurturing Creativity and Knowledge

Teachers shape the future of students and the nation by imparting knowledge, fostering growth, and inspiring excellence in every student they guide.

Our school organizes numerous co-curricular and extracurricular activities to provide students with opportunities to develop their talents and skills. A recitation competition was organized in July. Poetry, a beautiful art form, allows us to express our thoughts, emotions, and experiences in a unique and creative way. Students showcased their creativity, talents, and ideas through their recitations.

On August 6, 2024, the school held a drawing competition on the topic Freedom Fighters. Students participated enthusiastically, creating wonderful drawings that displayed their artistic skills and gave expression to their imagination.

The GK quiz competition was another exciting event where students tested their knowledge across subjects like science and current affairs. They impressed the audience with their quick thinking and teamwork.

The events and competitions concluded with an award ceremony, where winners were honoured with prizes. The event recognized not only the winners but also the dedication and effort of every participant.

These events provided a platform for students to showcase their skills, foster collaboration, and encourage growth.



Sherin Vincent

Eng. Medium
(Ass't Teacher)



The School Exhibition

A Celebration of Creativity and Talent

The school exhibition was a resounding success, showcasing the remarkable talents and creativity of the students. It was held on December 21, 2024, at Nirmala Convent Girls Inter College. The event was the culmination of months of hard work and dedication by students, teachers, and parents. The exhibition was inaugurated soon after the Christmas programme for which Fr. Tharcus Britto was the chief guest and Fr. Renoy SDB and Fr. Jerome SDB were the guests of honour. To the surprise of everyone the Santa Claus walked along with the esteemed guests to inaugurate the exhibition. This was done to reflect what Jesus would do being born in today's high-tech and modern world. The exhibition featured a diverse range of exhibits and displays, carefully crafted by students from various grades and disciplines. The art and craft section was a vibrant display of colors, with intricate paintings created by the primary section students, reflecting their imagination and skill.

The science projects were equally impressive, featuring innovative experiments and models that demonstrated the students' understanding of complex scientific concepts. The event provided a wonderful opportunity for students to learn from one another, work as a team, develop their skills, and showcase their talents. Many students enthusiastically explained their projects to the parents who visited.

Some of the highlights of the exhibition included:

A robot designed and built by the students of Classes 10 and 11 Human lungs and eye models created by Class 12 and A working model of a JCB. An attractive portrait of Shahrukh Khan became the center of attraction and many other artwork and crafts by Class 12 including Social science models by Class 10.

Overall, the exhibition was an unforgettable experience, not only for the students but also for the parents who visited to witness these creative projects. The students had the opportunity to prove themselves in the world of imagination and innovation, paving the way for a bright future.

Palak Ahirwar Class 11B



A Memorable Fête

The ground of NirmalaConvent Girls Inter College was filled with the cheerful smiles of children on 14th November 2024—Children's Day. All the students came dressed in colourful attire and were brimming with happiness. Along with the fête, our honorable principal had arranged some exciting surprises for the students.

There were various prizes for the students. The first prize was for those wearing the most unique dresses, another was for the most disciplined girls, and the third was for the students who were found the most other centered and responsible during picnic. All these winners were awarded coupons as prizes.

The entire ground was adorned with different stalls set up by the teachers. These included not only stalls for delicious eatables but also games and even a Mickey Mouse swing that was the attraction for the younger students.

We had an incredible time and enjoyed every moment of the day. This Children's Day fête is a memory we will always cherish.



Deeksha Sharma, Class 11 B



Parents' Day Celebration (Chintan)

We, the family of Nirmala Convent Girls' Inter College (English Medium), celebrated the Parents' Day function with great enthusiasm on November 30, 2024. The event aimed to honor and recognize the significant role of parents in shaping the lives of their children. Around 600 parents attended the function. The occasion was graced by the presence of our school manager, Sr. Doreen, the principal, Sr. Poonam, and the in-charge of the English Medium section, Sr. Shalini.

The highlight of the event was a series of performances by students from LKG to Class 6, including an action song, a western dance, and a skit on the theme Save the Girl Child. These performances evoked emotions, smiles, and laughter from the audience. The principal, Sr. Poonam, expressed her gratitude to the parents for their invaluable contributions and encouraged them to remain actively involved in their children's education and growth.

Overall, the Parents' Day celebration was a resounding success, fostering stronger connections between the school and the parents and leaving everyone with cherished memories.



Jaspreet Kaur

Assistant Teacher (English Medium)



My Unforgettable Experience

I am MahiraSiddique of class5. I participated in the District Athletics Competition held on 10th and 11th January, at Dhayanchand Stadium with my sports teacher. I was thrilled to see so many children of other schools who also participated in different competitions. I participated in two events which were 100mt and 200m race. I secured 1st prize (Gold medal) in 200m race and 2nd prize (Silver medal) in 100m race.

I am grateful to God, my school especially my sports teacher for her encouragement and guidance. I had the joy of making my school and parents proud.



Mahira Siddique

(English medium) Class 5



Mental Health Among Students

Students are standing at the cross roads today. They face innumerable challenges in creating identity and proving their worth. A student having mental health means that he/she is able to make healthy choices; think, feel and act freely, handle stress and relate to others confidently. According to my opinion mental health of students is deteriorating day by day.

Negative Impact of mental health—The main reasons for lack of mental health among students is due to enormous pressure from studies, high expectations of parents, undue financial problems, disturbed families, increasing coaching pressures, bullying by classmates, wrong relationships, inability for time-management, depression, lack of self-esteem, and strong peer pressure. Students suffer from terrific pressure because their parents want to see them above 90 percent. They don't even think whether their child is interested or capable to get such high percentage. Nowadays, the most common problem that students face is how to manage their time properly. They often get irritated, provoked, tensed, worked out and depressed when they are not able to finish their work on time. Due to this they suffer from blood pressure, messed up relationships and mental imbalance. Strong peer pressure doesn't allow them to make good choices and they fail to listen to the advice of their parents and teachers. Low self-esteem is also a reason for lack of mental health among students because they face cut-throat competitions and suffer from inferiority complex. This makes them doubt their own ability to succeed, making them hesitant to engage in learning or take appropriate academic growth risks.

Creative ways to improve mental health—I would like to suggest few tips for improving our mental wellbeing:

- Trust in God and in one's ability, Pray and reflect
- Connect with others: healthy and refreshing relationships
- Steal time to sleep sufficiently
- Boost your self-esteem by appreciating yourself
- Cultivate hobbies—singing, dancing, playing, reading, writing and composing, drawing, graphic, designing etc.
- Set time for social media and friends.
- Choose the right streams and subjects owning your ability

Mental health is something that we all need to talk about. If we really want a solution to this problem, every parent should stop expecting too much from the children. Schools should organize many orientations for the students and the students should be provided good counselling. Youth are not only the future of the nation but also of the present. So we need to preserve the mental health of the students.



Ragini Raikwar 12 B

The Power of Perspective

All are right in their own place and have their own reasons and thoughts for being so. If someone knows he/she is wrong, he/she wouldn't knowingly say or do something incorrect.

This mindset allows persons to focus on their own journey rather than comparing themselves with others. They can celebrate their successes and learn from their failures without feeling the need to measure up to someone else's standards.

When we accept that everyone is right in their own place, we open ourselves up to a world of possibilities. We begin to see that each person has strengths, weaknesses, and interests that make them unique and valuable.



Kumkum Class 12th

Time is Precious

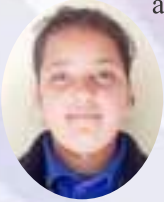
*Sometime time takes time
To pass away
Sometime it is fast
Hurrying to run away
We think it is much
But no, that's not true
When we need
It's not there
For works we want to do
It's precious
We must not waste it
When we need it
It won't be there to assist
Let's start utilising it with grace
And show the world
That we are the ones who will
Win the race.*



Ruchika
Class 6 (E.M.)

Save the Girl Child

Daughters are as important to society as sons. Both daughters and sons have equal roles, and without them, the existence of human life on earth is impossible. Both are equally responsible for the survival of mankind. Today, daughters contribute significantly to the development of a nation. The existence of women is crucial because, without daughters, we cannot imagine our existence. In Indian society, everyone desires an ideal mother, sister, wife, and daughter, but they often do not want that girl to be their own blood. Moreover, some people in society pressure parents to avoid having a girl child. To save girls, the first step begins at home. We should encourage family members, neighbors, friends, and relatives to value daughters and spread awareness about their importance.



**Iltiza Parveen
& Deeksha**

Class 6 (E.M.)



You Are Limitless

*No need to cry,
No need to hide,
No need to fear,
No need to overthink.
No need to give up,
No need to feel small,
No need to doubt yourself,
No need to blame yourself,
No need to justify every time,*

*No need to lose hope.
You are the future,
You are the power,
You are the wave of change.
You are strong,
You are precious,
You are great,
Incredible,
Revolutionary, Limitless.*

Yoshita Mishra, Class 11 B

Awaken the Light Within

*Sometimes your mind wants to give up,
That is the time you need to wake up.
You can't see the light until you open your eyes,
Crying for darkness with closed eyes is not wise.
You must listen to your brain, not your mind,
The mind seeks momentary happiness, but
for your future, it's not kind.
Sometimes your mind wants to give up,
That is the time you need to wake up.*

Manshi Bhaskar Class 12B



Teacher - A Second Parent

The one who educates us,
The one who teaches us to think beyond limits,
The one who shows us how to live our life,
The one who guides us on dos and don'ts,
And shapes us into better human beings,
Is the architect of every success story.

A teacher, a precious blessing from God,
While God is the creator of the universe,
A teacher is the creator of a better society.

The second parent of a child,
A teacher is a mentor and guide,

A teacher teaches us the value of life,

We accomplish our dreams despite strife.
To give her our love, care and earn,
Is our bounding duty and return
She transforms a heap of clay
From nothingness to a star
Only a teacher can make us



Mrs. Salina Swami

(Teacher)

Grow Like a Tree

*Grow like a tree, become like a tree.
Be the one, who believes in giving,
Not in taking.*

*Just as a tree gives you shade
When you are tired,
And offers you fruits and flowers,
Be the one who believes in kindness
Even when the world is cruel.*

*Grow like a tree, become like a tree.
Just as a tree grows upward without disturbance,
And provides for all without cost
Or expectation of benefits.*

*Be the one who gives everything
Without considering religion, caste, or colour,
Grow like a tree, become like a tree.*

Zainab Shaikh Class 10 B



NCGIC Teachers



NCGIC Management



The Gift of Friendship

May my friendships always be
The most important thing to me,
With special friends, I feel so blessed,
So let me give my very best.

I want to do much more than share
The hopes and plans of friends who care,
I will try all that a friend can do
To make their wishes come true.

Let me use my heart to see,
To realize what friends can be.
And make no judgments from afar,
But love my friends the way they are.



Adeeba

Class 4



Confidence Unbroken

I was a girl who was always silent in class
Not a topper ever, but I never gave up.
I spoke up and did my best.

Third time's the charm, my performance improved.
But when I excelled, I was labeled overconfident.
My grades dropped, and they said,
"She's overconfident"
They don't know-I was never a topper.
I just wanted to be a good student.

Now they think I'm overconfident.
I speak up, but they don't understand.
I share my truth, but they call me overconfident.
I want my voice to be heard, but they don't listen.
I want to break this tag, shed this name,
But they keep calling me overconfident.
Respect is earned, and I will always give it,
Regardless of age, I will stay young at heart.

I will live and keep trying
I will speak and think out of box,
My voice will rise above the noise and fear.
I am learning, growing, and striving for
more.



Saraswati Class 10-B

From The Parents

As parents, we are incredibly grateful for the exceptional education and nurturing environment that Nirmala Convent Girls' School provides for our daughters.

The teachers at Nirmala Convent are highly dedicated and passionate about their subjects. The extracurricular programs offered are diverse and foster talent in areas such as dance, sports, arts and brain quiz etc. The School maintains open, transparent communication with parents; we also appreciate the school's emphasis on discipline and values. Overall, we are incredibly satisfied with the education and environment at Nirmala Convent Girls' School.

Mr. Vijay Kumar
(Sujata Class-6 Eng. Medium)



Nirmala Convent School is a bustling hub of learning, where students are not just acquiring knowledge, but actively shaping their futures through a diverse range of academic and extracurricular activities. With a strong emphasis on holistic development, the school fosters a supportive and enriching environment that celebrates individual talents and encourages collaborative learning. The experienced and passionate teachers are committed towards their duty and provides personalized attention to the students. They ensure that every student reaches to their full potential through innovative teaching methods. The school encourages the students to actively participate in various competitions such as, singing, dancing and sports. Opportunities are given to the students to take on leadership their decision making skills.

Nirmala Convent School is more than just a place of learning; it is a vibrant community where the students are encouraged to grow intellectually, creatively and socially.

Rohit Batulwar
(Shivanshi Batulwar Class I)



A Girl

I am a girl,
I am a sweet river, not a salted sea.
I am strict but full of mercy,
I am hard but melt like ice.

I know how to stand with pride,
I can smile through my tears.
I enjoy life despite my fears,
I am the rhyme of a song.

I become coarse when faced with wrong,
I am a girl—truly, I am a girl.
Full of kindness,
Full of confidence.



Safiya Khan

Class 11 B



NIRMALA CONVENT GIRLS' INTER COLLEGE

In class 9 I entered this school making the best choice of becoming new in mind and heart and helped me daily games, quizzes, debates and dances on district and different because of its thought provoking and highly and challenges us especially the girls to come out of the independent.

My School is an abode of so much love and care among Odisha in class 11, not knowing Hindi properly. My difficulty and supported me. What I relish most in assembly ending with a food for thought which we get ample opportunities to develop our and enhance our talent. I like the most Sr. the students.

What makes this school unique and locality is that we have all kinds of programmes without wasting our study time. In but in the evening the school changes into a learn sports. Outsiders speak well about my school in Jhansi. From time to time thenewspapers cover this.

I do not approve the present trend of students leaving classes to score good marks. Usually the result is just school should have offline classes and coaching classes. It will save students' time, keep them in good make them excel in studies.

When I was in class 11, I got restless and when all the teachers complained about me to my by the Principal. Reena miss supported me. After 15 highest marks in English. This was the time when I support. I promised not to repeat such silly mistakes Medium and even little children not only speak school management has employed the best teachers

My experience of school is filled with joy, love and happiness. I was admitted in this school in 11th standard just to realize that its teachers are amazing and intelligent. Another quality of this school is that it is known for the safety of girls. The school gives the girls chances to express themselves on the stage. I like the discipline of this school. I always find positive energy in the school campus because of the spirituality of God.



my life for my future. It gave me a choice for with new opportunities like to take part in national level. My school is unique and inspirational functions such as "The Voice", "cage of society" and make our life

Hina Singh Parihar 12 A



the students and the teachers. I came from class teacher Miss Nilam understood my this school is our Morning Prayer nourishes the whole day. In this school personality, voice out our opinions Poonam's loving and caring nature for

Suman 12 A



different from other schools of our activities, quizzes, competitions, the morning we have serious study stadium, wherein many students and call it the best school for girls our news and people comment on

Tripti Sahu 12 B



the school and attending coaching the opposite. According to me centers should conduct online health and by clearing their doubts,

Ragini Raikwar 12 B



indisciplined. I was very much shocked parents. I was rusticated from the school days when I came to the school I got the realized my mistake and my teachers' again. Our school has started English English but also understand it well. The for this.

Anam 12 B



Tanishka Pardeshi 12A



Your Kids Deserve The Best Education

ADMISSION OPEN

Nursery to Class VII (For English Medium)

Classes 4 to 12 (For Hindi Medium)